श्री वॆंकटेश स्तवराज

श्रीरमण सर्वेश सर्वग
सारभोक्त स्वतंत्र सर्वदऽ
पारमहिमोदार सद्गुणपूर्णगंभीर ।
सारिदवरघ दूरगैसी
सूरिजनरिगॆ सौख्यनीडुव
धीरवेंकटरमण करुणदि पॊरॆयॊ नी ऎन्न ।।१ ।।

घन्नमहिमापन्न पालक
निन्न हॊरतिन्नन्य देवर
मन्नदलिन ना नॆनॆसॆनॆंदिगू बन्न बडिसदिरू ।
ऎन्न पालक नीनॆ इरुतिरॆ
इन्नु भवभयवॆकॆ ऎनगॆ
चन्नवेंकटरमण करुणदि पॊरॆयॊ नी ऎन्न ।।२ ।।

लकुमि बॊम्म भवामरेशरु
भकुतिपूर्वक निन्न भजिसी
सकललोककॆ नाथनॆनिपरॊ सर्वकालदलि ।
निखिळजीवर पॊरॆवॊ देवनॆ
भकुति नीयॆनगीयदिरलु
व्यकुतवाग्यपकीर्ति बप्पुदॊ श्रीनिकेतननॆ ।।३ ।।

याकॆ पुट्टदॊ करुण ऎन्नॊळु
साकलारॆय निन्न शरणन
नूकिबिट्टरॆ निनगॆ लोकदि ख्याति बप्पुवुदे ?।
नोकनीयने नीनॆ ऎन्ननु
जोकॆयिंदलि कायॊ बिडदॆ
एकदेवनु नीनॆ वेंकट शेषगिरिवास ।।४ ।।

अंबुजांबक निन्न पदयुग
नंबिकॊंडी परियलिरुतिरॆ
डॊंबॆगारन तॆरदि नी निर्भाग्य स्थितितॊरॆ ।
बिंबमूरुति निन्न करगत
कंबुवरवे गतियॊ विश्व
कुटुंबि ऎन्ननु सलहॊ संतत शेषगिरिवास ।।५ ।।

सारशिरिवैकुंठ त्यजिसी
धारुणीयॊळु गॊल्लनागि
चोरकर्मव माडि बदुकिद दारिगरिकिल्ल ।
सारिपेळुवॆ निन्न गुणगळ
पारवागिरुतिहवॊ जनरिगॆ
धीरवेंकटरमण करुणदि पॊरॆयॊ नी ऎन्न ।।६ ।।

नीर मुळुगी भारपॊत्तू
धारुणीतळवगॆदु सिट्टिलि

श्री वॆंकटेश स्तवराज

क्रूरनुदरव शीळि करुळिन मालॆ धरिसिदरु ।
पोर विप्र कुठारि वनवन
चारि गोप दिगंबराश्वव
एरि पोदरु बिडॆनॊ वेंकटशेषगिरिवास ।। ७ ।।

लक्ष्मिनायक सार्वभौमनॆ
पक्षिवाहन परमपुरुषनॆ
मोक्षदायक प्राणजनकनॆ विश्वव्यापकनॆ ।
अक्षयांबरवित्ति विजयन
पक्षपातव माडि कुरुगळ
लक्ष्यमाडदॆ कॊंडॆयो श्रीशेषगिरिवास ।। ८ ।।

हिंदॆ नी प्रह्लाद गोसुग
ऎंदु नोडद रूपधरिसी
बंदु दैत्यन ऒडल बगॆदू पॊरॆदॆ बालकन ।
तंदॆताय्गळ बिट्टु विपिनदि
निंदु तपिसुव पंचवत्सर
कंदना ध्रुवगॊलिदु पॊरॆदॆयो शेषगिरिवास ।। ९ ।।

मडुविनॊळगिह मकरिकालनु
पिडिदु बाधिसॆ करियु त्रिजग
द्वडॆय पालिसॊ ऎनलु तक्षण बंदु पालिसिदॆ ।
मडदिमातनु केळि बलुपरि
बडवब्राह्मण धान्यकोडलु
पोडविगसदळ भाग्य नीडिदॆ शेषगिरिवास ।। १० ।।

पिंतॆमाडिद महिमॆगळ ना
नेंतु वर्णिसलेनुफल श्री
कांत ऎन्ननु पॊरॆयॆ कीरुति निनगॆ फलवॆनगॆ ।
कंतुजनकनॆ ऎन्न मनसिन
अंतरंगदि नीनॆ सर्वद
निंतु प्रेरणॆ माळ्पॆ सर्वद शेषगिरिवास ।। ११ ।।

श्रीनिवासनॆ भक्तपोषनॆ
ज्ञानिकुलगळिगभयदायक
दीनबांधव नीनॆ ऎन्नमनदर्थ पूरैसॊ ।
अनुपमोपमज्ञान संपद
विनयपूर्वकवित्तु पालिसॊ
जनुमजनुमकॆ मरॆयबेडवो शेषगिरिवास ।। १२ ।।

मदवु मत्सर लोभ मोहवु
ऒदगबारदु ऎन्न मनदलि
पदुमनाभनॆ ज्ञान भक्ति विरक्ति नीनित्तु ।
हृदयमध्यदि निन्न रूपवु

श्री वॆंकटेश स्तवराज

वदनदलि तव नाममंत्रवु
सदय पालिसॊ बॆडिकॊंबॆनॊ शेषगिरिवास ।। १३ ।।

अंदनुडि पुसियागबारदु
बंद भाग्यवु होगबारदु
कुंदु बारदॆ निन्न करुणवु दिनदि वर्धिसलि ।
निंदॆ माडुव जनर संगवु
ऎंदिगादरु दॊरॆय बारदु
ऎंदु निन्ननु बॆडिकॊंबॆनॊ शेषगिरिवास ।। १४ ।।

एनु बेडलि ऎन्न देवनॆ
सानुरागदि ऎन्न पालिसॊ
नानाविधविध सौख्य नीडु इहपरंगळलि ।
श्रीनिवासनॆ निन्न दासगॆ
एनुकॊरॆतिल्लॆल्लि नोडलु
नीनॆ निंतीविधदि पेळिसु शेषगिरिवास ।। १५ ।।

आरुमुनिदवरेनु माळ्परॊ
आरुवॊलिदवरेनु माळ्परॊ
आरु स्नेहिगरारु द्वेषिगळारुदाशिनरु ।
क्रूर जीवर हणिदु सात्विक
धीर जीवर पॊरॆदु निन्नलि
सार भकुतियनित्तुपालिसो शेषगिरिवास ।। १६ ।।

निन्न सेवॆयनित्तु ऎनगे
निन्न पदयुग भक्ति नीडी
निन्न गुण गण स्तवन माडुव ज्ञान नीनित्तु ।
ऎन्न मनदलि नीनॆ निंतू
घन्न कार्यव माडि माडिसु
धन्यनॆंदॆनिसॆन्न लोकदि शेषगिरिवास ।। १७ ।।

जय जयतु शठ कूर्म रूपनॆ
जय जयतु किटि सिंह वामन
जय जयतु भृगुराम रघुकुलसोम श्रीराम ।
जय जयतु शिरि यदुवरेण्यनॆ
जय जयतु जनमोह बुद्धनॆ
जय जयतु कलिकल्मषघ्ननॆ कल्किनामकनॆ ।। १८ ।।

करुण सागर नीनॆ निजपद
शरणवत्सल नीनॆ शाश्वत
शरणजन मंदार कमलाकांत जयवंत ।
निरुत निन्ननु नुतिसि पेडुवॆ
वरद गुरुजगन्नाथविठ्ठल
परम प्रेमदि पॊरॆयॊ ऎन्ननु शेषगिरिवास ।। १९ ।।